कृष्णं

नमामि

दर्शकः

प्रशान्त घनश्याम-जमुना देसाई

रत्न
२

Yamunām Namāmi

based on

Yamunāṡhtakam

of

Pujya Shrï Vallabhāchārya

Written & published by

Prashant Desai

Dipt.me

e-publication

April 12, 2025

मूल्यः सहयोग-सेवा

संपर्कः usha.dipt@gmail.com

© Prashant Desai

All Rights Reserved.

Without the prior written permission of the publisher,

This book may not be reproduced or sold in any form.

Email: usha.dipt@gmail.com / Visit at: www.dipt.me

हरिॐ नमो भगवते श्रीकृष्णाय वासुदेवाय

श्रीवल्लभाचार्यविरचितम्

॥ यमुनाष्टकम् ॥

आधारित

श्रीवल्लभ साहित्यमाला : रत्न - २

यमुनां नमामि

मूल श्लोक पदच्छेद अन्वय यथार्थ भाषांतर
पद्य भाषांतर तात्पर्य

दर्शक : प्रशांत घनश्याम-जमुना देसाई

प्र.लेख

यमुनाष्टक, यह आचार्य श्रीवल्लभके 'पुष्टि दर्शन'का स्तोत्र है। उनके मतसे भक्तके जीवनमें, कर्मसे या तपसे, योगसे या सेवासे, ज्ञान प्राप्त हो तब और कीसी ज्ञानीका जीवन, प्रभुकृपासे भक्तिपूर्ण हो तब, पुष्टि हुई ऐसा भाव है। पुष्टि अर्थात् पोषण, वृद्धि और स्वीकार। वल्लभाचार्य सुरधुनी.. सुरनद्य.. गंगासागर पर बैठे होंगे और इस ज्ञानरूपी गंगा और भक्तिरूपी यमुना, दोनोंका मिलन समाधिमें प्रत्यक्ष किया होगा, वह दर्शन सभीके समक्ष है।

जब ज्ञानका ही वर्चस्व था, उस कालमें यमुनाजीका.. भक्तिका निरूपण करते हुए वल्लभाचार्य कहते है, गंगाजीको.. ज्ञानको अब सच्ची पुष्टि मिलि। मानो ज्ञान भी स्वयंको अपूर्ण मानता था, भक्तिको मिलके पूर्ण हुआ।

जिनके जीवनमें ज्ञान-भक्तिका संगम होता है, वह ब्रह्मस्थ होता है और उसका जीवन स्वयं भगवान स्वीकार लेतें है, वह पुष्टि है.. स्वीकृति है। आचार्यश्रीको उसकी प्रतीति.. अनुभूति है। आपश्री प्रकृतिप्रेमी तो है ही, यहाँ यमुनाके रमणीय स्थानोंका कविकल्पित वर्णन मिलता है, साथमें तत्त्वदर्शन!

स्तोत्र अतिसुंदर है पर कालसिकंजेसे, उसको भी अन्याय हुआ है। अतः सबसे पहले, अभीतकके भाषांतरमें हुए विबोध.. गैरसमझके बारेमें सोचेंगे। पहेला विबोधक भाषांतर किसने किया वो मुझे ज्ञात नहीं है, पर बादमें उसी भाषांतरकी ही नकल हो करके, पीछेसे आया आगे लौटा दीया, जैसी परिस्थिति हुई है। इसमें वल्लभाचार्यको.. उनके वाङ्मयको अन्याय हुआ है।

संस्कृतमें दो शब्द है, दीर्घ ई संग सपत्नी = शोक्य या पत्नीसहित और ह्रस्व इ संग सपत्नि = शत्रु या स्पर्धक.. हरीफ। यहां ह्रस्व शब्द है, इसलिये उसका अर्थ स्पर्धक लेना है। गंगाजी और यमुनाजी स्पर्धामें है, कौन कितनोंको मोक्ष देतें है! उनके सपत्नि.. स्पर्धक है! दुसरा कमलजाका अर्थ गलत किया है, लक्ष्मी न होगा। कमला.. पद्माका पर्याय है लक्ष्मीजी और कमलजा शब्दका अर्थ होता है गंगाजी। यहाँ प्रस्तुत यथार्थ भाषांतरसे सबकुछ समझमें आ जायेगा।

अंतिम पदके विश्लेषणमें एक दृष्टिभेद है, स्मर-श्रम-जल-अणुभिः! आचार्यश्रीने मानो जानबुझकर, गूह्यताके लिये, द्विअर्थी लिखा हो ऐसा लगता है। पहलेके और इस यथार्थ भाषांतरमें यह स्पष्ट होगा। वल्लभाचार्यजीका दृष्टिकोण कितना महान है, वह ध्यानमें आयेगा।

यह भी ध्यान रहें, छठे-सातवें श्लोकमें गंगाजी स्वयं प्रकट होकर यमुनाजीको कहती है और आचार्यश्रीको अनुमोदन देती है, वह ध्यानमें आना चाहिये। मुझे भारी विमर्शनके पश्चात् यह दर्शन हुआ है!

भाषांतरके बाद, तात्पर्य.. विश्लेषण अत्यंत संक्षिप्तमें लिखा है, तो उसका वास्तविक अर्थ ध्यानमें लेकर, ज्यादा चिंतन-मनन करके, आचार्यश्रीके इस स्तोत्रका तात्त्विक हेतु समझनेका प्रयत्न करेंगे तो, आशा है पुष्टिमार्गमें.. ज्ञानपूर्ण भक्तिमार्गमें प्रगति अवश्य होगी।

वल्लभ तो वल्लभ है! भक्तिके राजराजेश्वर है वल्लभाचार्य! भक्तिके लिये दूसरे आचार्योंने, भक्तोंने वा महापुरुषोंने बहोतकुछ कहा है, फिर भी श्रीवल्लभकी प्रस्तुति भिन्न है, उनके साहित्यमें एक अपूर्व भक्तिका दर्शन मिलता है, उनके दूसरे ग्रंथोसे और स्तोत्रोंसे वो स्पष्ट होता है।

प्रवाह.. सामान्य मानवतासे पुष्टिभक्त.. ज्ञानीभक्त होने तकका राजमार्ग आचार्यश्रीने दे दिया है। हमको केवल चलना है! उसी रीतसे चलकर प्रभु तक पहोंचनेकी सबको प्रेरणा मिले ऐसी हरिको प्रार्थना। जय श्रीकृष्ण।

नित्य अभ्यासु,

प्रशांत देसाई

रामनवमी

ता. ६ ॲप्रिल २०२५

१ नमामि यमुनामहं सकलसिद्धिं हेतुमुदा
मुरारिपदपंकज-स्फुरदमन्दरेणूत्कटाम्।
तटस्थनवकानन-प्रकटमोदपुष्पाम्बुना
सुरासुरसुपूजित-स्मरपितुः श्रियं बिभ्रतीम्॥

नमामि	यमुनाम्	अहम्	सकलसिद्धिम्	हेतु	मुदा
प्रणाम	यमुनाजीको	मैं	सकलसिद्धिको	हेतु	आनंद
मुरारि	पदपंकज	स्फुरत्	अमन्द	रेणु	उत्कटाम्
श्रीकृष्णके	चरणकमलसे	स्फूरित	चैतन्य	रेणुकण	सुस्पष्ट
तटस्थ	नवकानन	प्रकट		मोदपुष्प	अम्बुना
किनारोंपे	नयी वनराजी	प्रगटे		आनंदपुष्प	जलमें
सुर-असुर	सुपूजित	स्मरपितुः		श्रियम्	बिभ्रतीम्
देव-दानवोंसे	सुपूजित	श्रीकृष्णकी		शोभाको	धारणहारको

(यत् पवित्रम् यमुनातटे, श्रीभगवान कृष्ण..) मुरारि पदपंकज उत्कटाम् अमन्द रेणु स्फुरत्, तटस्थ नवकानन (च) अम्बुना मोदपुष्प प्रकट। सुर-असुर सुपूजित, स्मरपितुः.. श्रीकृष्णः श्रियम् बिभ्रतीम्, सकलसिद्धिम् यमुनाम्, मुदा हेतुः अहम् नमामि॥

(पवित्र यमुनाकिनारे, श्रीभगवान कृष्णके..) मुरारिके चरणकमलसे, सुस्पष्ट.. नयनाकर्षक ऐसे अमन्द.. चैतन्यमय रेणुकण स्फूरतें है.. ऊडतें है; (जिसके दिव्य) किनारोंपे नवीन वन-उपवनो (और) जलमें प्रमोद-पुष्प.. आनंद-कमल प्रगटतें है। (जो) देवों तथा असुरोंसे अच्छी तरह पूजे गयें है, (वैसे) स्मर.. प्रद्युम्नके पिताकी (अर्थात् कामदेवसे भी उत्कृष्ट स्वरूपवान श्रीकृष्णकी) शोभाको.. प्रतिभाको धारण किये हुएको, सकलसिद्धि स्वरूप यमुनाजीको मैं नमन.. प्रणाम करता हूँ। हेतु.. कारण मात्र, मुदा.. हर्ष.. आनंद है।

१. नमन है यमुनाको सकलसिद्धिको मुदा हेतु
मुरारि पदपंकजे स्फूरे चितिरेणु सदा
तटे तटे नये विपीन प्रगटे मोदपुष्पों जले
सुरासुरे सुपूजित कृष्णसे शोभितको

तात्पर्य ः व्यक्तोपासना भगवानतक पहोंचनेका सरलमार्ग है, जो भक्तियोग नामसे प्रसिद्ध है। अव्यक्त ईश्वरको सर्वत्र व्यक्त करनेकी कला है मूर्तिपूजा! भगवान मूर्ति नहीं, मूर्त हो सकते नहीं और मूर्तिमें भगवान है भी, नहीं भी! आप कण कणमें ईश्वर मानते हो तो है, भक्तकी दृष्टिमें विशेष रूपसे है और यदि आपने आकाशमें ही बिठाये रखें है तो नहीं है! पत्थर तो क्या, कोई जीवमें भी नहीं पाओगे! आप किससे क्या सिख लायें है, सभी आधार उस श्रद्धा पर है।

यमुनाजी भक्तिका मूर्तिमंत स्वरूप है। यहां आचार्यश्री कहते है, हे यमुनाजी! आप सुर-असुर दोनोंसे पूजित हो, अर्थात् भक्ति-तत्त्व सर्वमान्य है। नमन करता हूँ यमुनाको.. सकलसिद्धिको अर्थात् भक्तिको! दूसरी सिद्धि हो या न हो, भक्तिरहित क्षण भी न चलें, यह भक्तका दृष्टिकोण है। भक्ति ही सकलसिद्धि!

मूर्तिपूजा भक्तिका उत्कृष्ट स्वरूप है, वैदिककालसे प्रसिद्ध है; ऋषि-मुनि, अवतारोंने भगवद्‌तुल्य स्थान दिया है, इसलिये कहा हे यमुनाजी! आपने भगवानका ही रूप धरा है। नवकानन.. नयें नयें भक्तसमूह प्रकट होते ही रहतें है! हजारों वर्षोंका इतिहास है। युगे युगे मोदपुष्प जैसे, प्रसिद्ध या अप्रसिद्ध भक्त, मिलते है और मिलते ही रहेंगे! उन पुष्पोंका ध्यान भगवान ही रखतें है।

भक्तको सभी जीव भगवानके चरणोंसे नीपजते हुए चैतन्यपूंज लगतें है! कुछ चरणोंसे दूर, कुछ समीप है! सभी उसके अंश है इसकी स्पष्ट प्रतीति भक्तको है।

मुदा हेतु। जिस हेतुमें अपेक्षा, आशा, आकांक्षा, भोगदृष्टि न हो तो, वहाँ मात्र आनंद रहेगा और उस निरपेक्ष, निराकांक्ष आनंदके लिये ही, हे भक्तिदेवी! आपको नमन करता हूँ। हे यमुने, आपके जैसी ही भक्ति चाहिये! भगवानसे कुछ मिले न मिले, कोई हेतु नहीं। मात्र और मात्र सेवा चाहिये, कारण सेवा ही आनंद है। दूसरी वात, जो कोई भगवानको समजायें वो गुरु लगे, उनको प्रथम नमस्कार होगा! पर यह तो भगवानसे ही मिलायेगी, उस भक्तिको प्रथम महा नमस्कार!

२ कलिन्दगिरिमस्तके पतदमन्दपूरोज्ज्वला
विलासगमनोल्लसत् प्रकटगण्डशैलोन्नता।
सघोषगतिदन्तुरा समधिरूढदोलोत्तमा
मुकुन्दरतिवर्धिनीं जयति पद्मबन्धोःसुता॥

कलिन्द	गिरिमस्तके	पतत्	अमन्दपूरा	उज्ज्वला	
सूर्यकिरणें	गिरिशिखर पर	गिरते	तेजपूंज	देदीप्यमान	
विलासगमन	उल्लसत्	प्रकट	गण्डशैला	उन्नता	
रमते जाते	उल्लासपूर्वक	प्रगटी हुई	बडी शिलाएँ	ऊँची	
सघोष	गति	दन्तुरा	समधिरूढा	दोला	उत्तमा
गुंजनसह	गतिसे	ऊँचीनीची	सुविराजमान	पालखीमें	उत्तम
मुकुन्द	रतिवर्धिनीम्	जयति	पद्मबन्धोःसुता		
श्रीकृष्णमें	प्रीति बढाते हुए	जय पातें है	सूर्यपुत्री.. यमुना		

(यत्र) कलिन्द गिरिमस्तके उज्जवला अमन्दपुरा पतत्। (तत्र) उन्नता प्रकट गंडशैला (मध्ये) उल्लसत् विलास गमने, उत्तमा दोला समधिरूढा, दन्तुरा सघोष गति, मुकुन्द.. श्रीकृष्ण रतिवर्धिनीम्, पद्मबन्धोःसुता.. यमुना (सदा) जयति॥

(जहाँ) कलिन्द.. सूर्यकिरणें पर्वतके शिखरों पर देदीप्यमान.. तेजपूंज गिर रहें है। (सभी शिखर सोनेरी लग रहें है, वहाँ) प्रगट हुई उन्नत.. ऊँची बडी बडी शिलाखंडोंके बिचसे, उत्तम दोला.. झुलते हिंडोलेमें विराजमान होकरके, उल्लासपूर्वक.. प्रसन्नतासे, खेलते खेलते.. विहार करते हुए (श्रीयमुनाजी मधुर) गुंजन करते करते, दन्तुरा.. ऊँची-नीची गतिमें.. ऊछलकूद.. किलकिलाट करते जाते, मुकुन्द.. श्रीकृष्णमें अनुरक्ति.. प्रीति बढाये जाते सूर्यपुत्री यमुनाजी, सर्वत्र यश पातें है.. जय जयकार होता है।

२. कलिन्द गिरिमस्तके गिरके तेजपूंज दीपे
विलासी गति उल्लासी शिलाएँ भी भव्यतर दिसे
सघोषे जाये खंतसे विराजकर उत्तम झूले
मुकुंदरति बढातें है जय होता सूर्यजायीका

तात्पर्य ः क्या दर्शन है! ज्ञान तप करता हुआ खडा है, उन्नत शीलाओंकी भाँति तपस्वी लोग जैसे ज्ञानकिरणें पातें है, पर मार्ग शुष्क और कठीन है। आचार्यश्री कहतें है, अव्यक्तोपासना सरल नहीं है, जबकी भक्तिमार्ग वहाँसे ही नाचता-गाता, गुंजन करता, हसता रमता दौडता है! भगवानका आश्रित है! मानो पालखीमें बिठाकर ले जातें है! ज्ञानमार्गमें साधक हाथ पकडता है, छूट जायें तो साधकका दोष! जब कि भक्तिमार्गमें साधकका हाथ भगवान थामे, साथ छूटेगा? पर ऐसा भी नहीं कि आश्रय आसान है, मात्र बोलनेसे शरण नहीं मिलता!

ये सच है कि ज्ञानियोंको तेजस्वी ज्ञानकिरणें मिलें, परंतु भक्ति तो साक्षात् सूर्यपुत्री! सौरी ही कालिन्दी! कलिन्द.. सूर्यकिरण समान वेगवान, तेजस्वी, प्रभावी! सूर्यदेवकी तीन संतानें; शनी, यम व यमुना। भक्ति-जीवनकी भी तीन कक्षाएँ। श्रद्धाकाल, साधनाकाल और भक्तिकाल। आचार्यश्रीके मत अनुसार प्रवाहकाल, मर्यादाकाल और पुष्टिकाल! प्राईमरी, सेकन्डरी, हायरस्कूल!

प्रवाह.. श्रद्धाकालमें दैवी या आसुरी और सांख्य या योग, ये निर्णय लेतें है। उसमें कर्मका ध्यान रखना है! उसके देव शनि है! तत्पश्चात् साधनाकाल, मर्यादामें रहना होता है, यम-नियम धर्मपालन, यमराजका क्षेत्र! पश्चात् यमुनाजीका क्षेत्र! भक्ति उनकी भाँति तेजस्वी चाहीए! रोतल या मांगणका काम नहीं। भक्तिकालमें भक्त तुष्यन्ति च रमन्ति च.. हसता-रमता ही होगा! उसको पुष्टि मिलती है।

मंदिर गया और भगत हो गया, इतना आसान नहीं है। ऐसा भी नहीं कि सभी क्षेत्र पसार करने पडें, भगवान कहतें है, अपिचेत्सुदुराचारो.. भारी पापी भी मेरे शरणमें आयें, हृदय परिवर्तन हो जाय, तो वो मेरा भक्त ही है। भक्ति उसके जीवनमें हरिप्रीति बढायें, जैसे ही प्रभु आसक्ति बढें, संसार प्रति विराग बढें! वालीया वाल्मिकी हो जाय और अजामिलका उद्धार हो जाय! ऐसे ऐसे मोदपुष्प प्रगटते है, उसे भक्तिका.. यमुनाका जय कहतें है, ऐसे जय हर युगमें होतें है!

३ भुवं भुवनपावनीम् अधिगतामनेकस्वनैः
प्रियाभिरिव सेवितां शुकमयूरहंसादिभिः।
तरंगभुजकंकण-प्रकटमुक्तिकावालुका
नितम्बतटसुन्दरीं नमत कृष्णतुर्यप्रियाम्॥

भुवम्	भुवनपावनीम्	अधिगताम्	अनेक	स्वनैः
भुवन	भुवन पावन करते	प्राप्त होतें है	अनेक	गुंजन

प्रियाभिः	इव	सेविताम्	शुक	मयूर	हंस	आदिभिः
सखीओंसे	जैसे	सेवित	पोपट	मोर	हंस	आदीसे

तरंगभुज	कंकण	प्रकट	मुक्तिका	वालुका
तरंगबाजु.. वलय	फव्वारे	प्रगटते	मोतीसम	वाछंट, बिंदुएँ

नितम्बतट	सुन्दरीम्	नमत	कृष्ण तुर्य प्रियाम्
ढलते किनारे	सुंदरीको	नमतें है	कृष्णकी चतुर्थ प्रियाको

अनेक स्वनैः अधिगताम् भुवम् भुवनपावनीम्, शुक मयूर हंस आदिभिः प्रियाभिः इव सेविताम्, कंकण प्रकट तरंगभुज (च) मुक्तिका वालुका, सुंदरीम् कृष्णतुर्यप्रियाम् नितम्बतट नमत॥

अनेक स्वर.. गुंजन.. ध्वनीयाँ प्राप्त होती है, और सभी भुवनोंको.. लोगोंको पावन करते (जाते यमुनाजी), पोपट मोर हंस आदीसे, प्रिय सखीयोंसे जैसे सेवे हुए.. साथ ही रहनेवाले है। कंकण.. पाणीके फव्वारोंसे प्रगट होती तरंगें.. वलय (और) वाछंट.. पाणीके उडते मोतीसमान जलबिंदुओंसे (अत्यंत सुंदर लगनेसे उस) सुंदरीको, श्रीकृष्णकी तुर्यगा.. चतुर्थ महाराणी यमुनाजीको, नित्-अंब.. ढले हुए तट.. अवरोहसे शोभित किनारें नमन करतें है।

३. भूवन करें सौ पावन मिलतें अनेक संगीत
प्रियासमान सेवित शुक मयूर हंसादिसे
तरंगो कंकणो स्फूरे मोतीसी दिसे बिंदुएँ
सुंदरीको निधितटें नमे कृष्णकी तुर्याको

तात्पर्य ः प्रत्येक भूवन.. सभी लोगोंको पावन करनेकी शक्ति भक्तिमें है। बाललोक, युवालोक, महिलालोक, वृद्धलोक, धनीलोक, श्रमिकलोक, नेतालोक, सर्वलोक पावन होतें है और उन सभीके सूर अलग.. संगीत भिन्न! बालक पोपट जैसे नवशीखीये, जैसे संस्कार दो वैसे लेतें है! भक्ति मिले तो पुरा जीवन खीले! युवान मोर जैसे रंगीन! जीवनके ये २०-२५ वर्ष ही कला कर सकतें है, इसमें यदी भक्ति मिले तो धन्य.. कृतकृत्य! शुद्ध जीवनसे वृद्ध हंस जैसे शुभ्र है! उसको भक्ति मिले तो पुष्ट हो जाय! वैसा जीवन भगवानको भायें! विभिन्न ऐसे ऐसे अनेक सेवकोंसे सेवित.. पूजित यमुनाजी आप सभीके प्रिय हो, महान हो।

बचपनसे ही विवेक-धैर्य-आश्रयका सेवन हुआ हो तो जीवनमें रम्यता आयें, जीवन सजा नहीं, मजा लगे! सुखमें या दुःखमें भी जीवन रमणीय लगे। ईश श्रद्धाकी तरंगें प्रगटे, प्रभुप्रेमके फव्वारें फूटे! भक्तिभावकी वाछंट.. छालकोंसे भगवान आसपास ही है उसकी अनुभूति जगे! साथ ही भगवानका विरह सतायें!

साधकको यमुनाजीके मनोरम्य किनारें, भगवद्रूप हुए भक्त लगतें है! उन भक्तोंके जीवनमेंसे प्रेरणा और आश्वासन पातें है! वे नितंबतट.. हरेभरे लयबद्ध किनारें, कृष्णकी चतुर्थ महाराणी यमुनाजीको नमतें है। यहाँ श्रीवल्लभने सुंदरी शब्दप्रयोग किया है! अष्ट ऐश्वर्य पटराणीयाँ ः परा.. रुक्मिणी, अपरा.. सत्यभामा, काश्या.. जांबुवती, भक्ति.. यमुना, प्रकीर्ति.. श्रुतकीर्ति, गंतव्या.. मित्रवृंदा, प्रशांति.. भद्रा और मुक्ति.. लक्ष्मणा। ये सभी सुंदर न होगी? सभी ऐश्वर्याएँ है!

जिन्होंने भगवानको प्रेम किया है वे सभी भक्तिके चरणोमें रहें है। यमुना माँको स्वीकारा! बालकको माँसे अधिक सुंदर कोई लगे? मुक्ति माँ सामने है फिर भी भक्ति माँकी शरणमें जानेवाले महापुरुष बुद्धिशाली भी है और भावपूर्ण भी है! भक्त साधकने विश्वमें अनेक महापुरुष देखें है, वे भव्य है, मुक्त है, आकर्षक या समर्थ है पर, जो दिव्यता भक्तोंमें है वो कहीं ओर नहीं मिलि! वे ऐसे किनारें है!

४ अनन्तगुणभूषिते शिवविरंचिदेव स्तुते
घनाघननिभे सदा ध्रुवपराशराभीष्टदे।
विशुद्धमथुरातटे सकलगोपगोपीवृते
कृपाजलधिसंश्रिते मम मनःसुखं भावय॥

अनन्तगुणभूषिते	शिव	विरंचि	देव	स्तुते
अनंत गुणोंसे सुषोभित	शिवजी	ब्रह्माजी	विष्णुजीसे	स्तुत्य
घनाघननिभे	सदा	ध्रुव	पराशर	अभीष्टदे
गाढ वादल समान	नित्य	ध्रुव	पराशरको	इच्छित वर देते
विशुद्ध	मथुरातटे		सकल गोप गोपी वृते	
शुद्ध हुई	मथुराकिनारे		सर्व गोप-गोपीओंसे आवृत	
कृपाजलधि	संश्रिते	मम	मनःसुखम्	भावय
कृपासिन्धु श्रीकृष्णमें	संमिश्रित	मेरे	मनको प्रसन्न	करते हो

हे अनंतगुणभूषिते! शिव विरंचि विष्णुदेव स्तुते! सदा घनाघननिभे ध्रुव पराशर अभिष्टदे! विशुद्ध मथुरातटे सकल गोपगोपीवृते! कृपाजलधि.. श्रीकृष्ण संश्रिते.. हे यमुने! मम मनःसुखम् भावय॥

हे अनंत गुणोंसे विभूषित.. शोभायमान (यमुनाजी)! शिव ब्रह्मा विष्णु (जैसे महादेवोंसे भी) स्तुति पायें हुए (हे देवी!) सदाकाल घनघोर घटा.. घनश्याम वादलों समान (कृपा वरसाकर) ध्रुव (जैसे उत्तम बालकों और राजाओं तथा) पराशर (जैसे ब्रह्मर्षियोंको भी) अभिष्ट देनेवाले.. कल्याण करनेवाले! विशुद्ध मथुरानगरीके तट पर, समस्त गोप-गोपीओंसे घीरें हुए! कृपासागर.. श्रीकृष्णमें संश्रित.. एकरूप हुए (हे यमुनाजी)! मेरे मनको सुख.. प्रसन्नताका भाव प्रदान कर रहे हो! (भक्ति ही भगवान लगनेसे मन आनंदित है!)

४. अनंतगुण भूषण शिवविरंचिदेव स्तवे
घनाघनसम सदा ध्रुव पराशरने वर पायें
विशुद्ध मथुरातटे सर्व गोप गोपी व्रते
कृपासिंधुमें संश्रित मेरा मन प्रसन्न करें

तात्पर्य ः सद्गुण भक्तिके आभूषण है। भक्तिका प्रताप ही ऐसा है, गुणोंको खिंच लें! साधकको लगे, भगवानका होना है तो जीवन सद्गुणोंसे शोभना चाहिये। गीताके १६वें अध्यायके सभी दैवीगुण मेरे जीवनमें होंगे ही, ऐसा भक्तको लगता है। यमुनाजी आप स्वयं अनंत गुणोंसे विभूषित हो! इसलिये त्रिदेव ः ब्रह्मदेव, विष्णुदेव व महादेव आपकी स्तुति करतें है। और क्यों न करे? पत्नी किसकी हो? देवोंके देव, सर्वस्रष्टा, एकमेवाद्वितीय, भगवान श्रीकृष्णकी!

कलियुगने बहोत खेदानमेदान किया है, करेगा ही! इसी लिये तो उसकी नियुक्ति है! उसका कर्तव्य है, किसी भी तरहा सभी भगवानसे विमुख रहें, ऐसा करना है कि कोई परम तत्त्वको पहचान न सकें। श्रीकृष्णको जानते है कितने? विश्वका चौथा भाग.. हिंदु, उनमें भी कितने संप्रदाय! कितने कृष्णको माने? उसमें भी ज्यादातर कृष्णको विष्णुके अवतार जानतें है! तो सही जाननेवाले है कितने?

भारतके महाकालमें विष्णु कृष्णके अवतार थे, परंतु पराशरके पुत्र कृष्ण-द्वैपायन होकर, नहीं कि वसुदेवके पुत्र कृष्ण होकर! कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्। ब्रह्मा, विष्णु व महेश जिनका ध्यान धरतें है वो भगवान श्रीकृष्ण है! हरकोई उनके ही अंशरूप है। यमुना श्रीकृष्णकी पत्नी है, नहीं के विष्णुकी। होंगी ही कैसे? विष्णु और सूर्य सगे भाई है, आदित्य। यमुना विष्णुकी भतिजी है, इसलिये यमुनाजीको लक्ष्मीजीकी शोक्य कहनेका पाप न करें। श्रीकृष्णको सही पहचानें।

कालेमेघकी भाँति महाराणी आप बरस ही जाते हो! आपकी कृपा होकर ही रहती है। ध्रुव और पराशर ये भक्तोंके दो प्रकार है। ध्रुव बालभक्त और पराशर प्रखर ज्ञानीभक्त! दोनोंमें सभी समा गये! सभी पर एक सी कृपा।

विशुद्ध मथुरा नगरी! चित्त विशुद्ध हो जायेगा तो, आत्म प्रकाश होगा, चैतन्य प्रगट होगा, वहाँ सर्व इंद्रियरूपी गोपीयाँ आवृत्त होंगी! हे कृष्णमय हुए यमुनाजी! भगवानकी भाँति आप ही, ऐसा सुख मुझे दे रहे हो! भक्तिमें ही सर्वसुख, सर्वानंद!

५ यया चरणपद्मजा मुररिपोः प्रियंभावुका
समागमनतोऽभवत् सकलसिद्धिदा सेवताम्।
तया सदृशतामियात् कमलजा सपत्नीव यत्
हरिप्रियकलिन्दया मनसि मे सदा स्थीयताम्॥

यया	चरण-पद्मजा	मुररिपोः	प्रियंभावुका
जिससे	कमलजा.. गंगाजी	श्रीकृष्णके	प्रिय.. प्रीतिपात्र हुए
समागमनतः	अभवत्	सकलसिद्धिदा	सेवताम्
संगमसे	हुए थे	सकलसिद्धिदाता	सेवक.. भक्तोंके

तया	सदृशताम्	इयात्	कमलजा	सपत्नि	इव	यत्
उससे	समकक्षामें	इतने	गंगाजी	स्पर्धक	भाँति	जो

हरिप्रिय	कलिन्दया	मनसि	मे	सदा	स्थीयताम्
श्रीकृष्णके प्रिय	यमुनाजी	मनमें	मेरे	नित्य	स्थित रहें

यया समागमनतः चरणपद्मजा.. गंगा, मुररिपोः प्रियंभावुका अभवत्। तया इयात् सदृशताम् सपत्नि इव कमलजा.. गंगा, सेवताम् सकलसिद्धिदा (अभवत्)। यत् हरिप्रिया कलिन्दया.. यमुना, सदा मे मनसि स्थीयताम्॥

जिस कारण (यमुनाजीके) समागम.. संगमसे, चरणपद्मजा.. विष्णुदेवके चरणकमलोंसे उत्पन्न हुए गंगाजी, मुरारिको.. श्रीकृष्णको प्रिय.. प्रेमभावी हुए। उनकी (यमुनाजीकी) इतनी तुलनामें.. समकक्षामें हो (तो मात्र) गंगाजी है (जो) स्पर्धककी भाँति सेवकोंको सकलसिद्धि.. भक्ति प्रदान करतीं है। (गंगा-यमुनाके बिच मानो स्पर्धा चलति है, कौन कितनोंको भक्त करें!) जो हरिके.. श्रीकृष्णके प्रिय है, कालिन्दी.. यमुनाजी, मेरे मनमें सदाकाल स्थित रहें।

५. जिससे ही गंगाजी मुरारीके हो गये प्रिय
संगमे सिद्धिदाता बनें है सेवकोंके सदा
उससे समवर्तने गंगाजी ही स्पर्धक बनें
हरिप्रिया कालिंदी मनमें मेरे रहो स्थित

तात्पर्य ः आचार्यश्री यहाँसे एक नया प्रकरण प्रारंभ करते है। जीवनका लक्ष्य ज्ञानप्राप्ति है कारण, न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। (गीता ४.३८) ज्ञानसे पवित्र यहाँ ओर कुछ नहीं है और ज्ञान तपसे, कर्मयज्ञसे या भक्तिसे मिले!

अब सुरधूनि.. संगम पर ज्ञानसागरसे भक्ति मिलती है। श्रीवल्लभ कहतें है, ज्ञानसे मुक्ति मिल जाय पर हरि न मिले! वो तो भक्तिसे ही मिले! अतः जिसका ज्ञान हेतु.. मुक्ति हेतु ही अवतरण हुआ है वो ज्ञानस्वरूपा.. चरणपद्मजा.. कमलजा.. गंगाजी भी आपके.. भक्तिके समागमसे ही श्रीकृष्णको जान सकें है! श्रीकृष्णको प्रिय हुए है। इतना ही नहीं, अबसे वो भी अपने सेवकोंको सकलसिद्धि अर्थात भक्ति प्रदान करने लगे है! ऐसे हे यमुनाजी! आपके स्पर्धक जैसे हो गये!

हे हरिप्रिय कलिन्दया.. सूर्यपूत्री! जीवन प्रकाशित करनेवाले यमुनाजी! ज्ञानसह भी मेरे चित्तमें सदा स्थित रहना! आचार्यश्री यमुनाजीको.. भक्तिदेवीको ऐसा कहतें है कारण, अद्वैत-ज्ञान होगा तो कुछ नहीं रहेगा, छोटा पूर्ण बडे पूर्णमें मिल जायेगा! मुझे तो नित्य हरिके दर्शन करने है, गुणगान गाने है, हरिभक्तोममें नाचना गाना है! हरिमिलन तक पहोंचना है! भक्तिसे ज्ञानका मिलन तो हुआ है पर, हे भक्तिदेवी! मेरे मनमें सदाकाल स्थिर रहो, आप जायें नहीं, अन्यथा मेरा अस्तित्त्व ही नहीं रहेगा।

भावसमाधिमें तल्लीन हुए भक्तशिरोमणी श्रीवल्लभाचार्य, अब एक अद्भुत प्रसंग.. अलौकिक दृश्य देखतें है, गंगाजी यमुनाजीको कह रहें है, उसका आचार्यश्री अत्यंत संक्षिप्त वर्णन करतें है। एक छोटेसे स्तोत्रमें इतना कुछ कह देना यह ऐश्वरीय शक्ति विना असंभव है! आचार्यजी यमुनाजीकी स्तुति करते थे, उस लालनाको देखकर, अचानक गंगाजी प्रगट हो गये और स्वयं ही यमुनाजीकी स्तुति करने लगे! कैसी आश्चर्यकारक घटना! धन्य हुए वल्लभ और धन्य हुए हम सभी! क्योंकि उन्होंने भक्तोंके लिये लिखे रखा; संक्षिप्तमें समस्त!

६ नमोऽस्तु यमुने सदा तव चरित्रमत्यद्भुतं
न जातु यमयातना भवति ते पयःपानतः।
यमोऽपि भगिनीसुतान् कथमु हन्ति दुष्टानपि
प्रियो भवति सेवनात् तव हरेर्यथा गोपिकाः॥

नमः	अस्तु	यमुने	सदा	तव	चरित्रम्	अति-अद्भुतम्	
नमन	हो	हे यमुने!	सदा	आपका	चरित	अतिअद्भुत	
न	जातु	यमयातना	भवति	ते	पयःपानतः		
नहीं	थोडीसी	यमयातना	होती है	आपके	जलपानसे		
यमः	अपि	भगिनीसुतान्	कथम्	उ	हन्ति	दुष्टान्	अपि
यमराज	भी	भाञ्जोंको	कैसे	अहो	हणे	दुष्ट हो	तोभी
प्रियः	भवति	सेवनात्	तव	हरेः	यथा	गोपिकाः	
प्रियपात्र	होते है	सेवासे	आपकी	कृष्णको	जैसे	गोपीकाएँ	

(गंगा उवाच, हे यमुने!) ते पयःपानतः यमयातना जातु न भवति। उ यमः अपि कथम् दुष्टान् अपि भगिनीसुतान् हन्ति? यमुने! तव चरित्रम् सदा अति-अद्भुतम्। तव सेवनात्, यथा गोपिका, हरेः प्रियः भवति। (अतः) नमः अस्तु॥

(अब गंगाजी यमुनाजीकी स्तुति करते हुए कहतें है, हे यमुनाजी!) आपके जलपानसे.. पायसपानसे थोडी भी यमयातना.. यमदूतोंका त्रास नहीं होता। अहो! यमराज भी कैसे, दुष्ट होने पर भी, बहनके पुत्रोंको.. भाञ्जोंको मारेंगे? (मनुष्य योनीसे दूर करेंगे?) हे यमुनाजी! आपका चरित्र.. लीलाएँ नित्य.. सदाकाल अति अद्भुत.. अलौकिक है, (जिसका वर्णन अशक्य है।) आपकी सेवासे.. भक्तिसे, जैसे गोपीकाएँ हुई वैसे, श्रीकृष्णको प्रिय होतें है। (इसलिये हे यमुने! आपको) नमन हो।

६. नमन हो यमुने! सदा तव अद्भुत चरितको
न होती यमयातना तव पूनित जलपानसे
यम भी कैसे कोपेंगे भांजे रहे जो है दुःसंगी
प्रिय होगी तुझ सेवा हरिको जैसे गोपीयाँ

तात्पर्य ः गंगाजी नमस्कार करके प्रथम, यमुनाजीके भक्तोंके अभयकी वात करतें है। वात करनेकी कला देवोंसे सिखनी चाहीये! कहती है, आपके भक्तोंको मृत्यु बाद भी कुछ न होगा, बीगडे तो भी, भांजोंको यमराज थोडे ही मारेंगे? कहनेका अर्थ, मेरे भक्तोंको क्वचित् यह सुख नहीं है! तात्त्विकतासे देखें तो ज्ञानी स्वयं रस्सीसे चढता है, छूटे तो स्वयंकी भूल! जबकी भक्त तैयार सोपानसे चढता है और भगवान सरकने नहीं देंगे! गंगाजी स्वयं भक्तोंको आश्वासन देती है, आपको कोई कुछ नहीं कर सकता, भगवानने स्वयं थामें है।

फिर कहती है आपकी सेवासे कृष्णको प्रिय होतें है, जैसे गोप-गोपीयाँ हुई। आपके समागमसे.. संस्पर्षसे मैं भी मुकुंदप्रिय हो गई! इसलिये आपको नमस्कार! व्यक्ति परिशुद्ध होनेसे या तप, ध्यान, समाधिपूर्वक ज्ञानी.. ब्रह्मरूप हो सकता है पर, इससे भगवान नहीं मिल जाते। बहोतसे निरीश्वरवादी महापुरुष हो गये, लोगोंको शून्यवादके सिवा ओर कुछ नहीं दीया! भक्ति विना सभी अधूरे है!

अत्रे नोंधनीय है कि यमुनाजीका बाल्यकाल और राधाजीका प्रौढकाल इतिहासमें कहीं वर्णित नहीं। अतः शक्यतः दोनों एक ही होंगे। शब्द व्युत्पत्ति है, रासेन धावति सा राधा! रास हेतु.. कृष्णके सत्संगके लिये, सबसे पहले दौड जाती वो राधा थी! इसलिये बचपनमें उसे राधा कहते होंगे, यौवनकालमें नामसे यमुना! पिताका नाम वृषभानु.. वर्षाकालका सूर्य, पर है तो सूर्य ही! गाम वर्षाणा जिसका हमने बरसाना किया! जिसका काम ही हरि जैसी कृपा वरसानेका! उस सूर्यपुत्री यमुनाको कृष्ण यौवनकालमें फिर यमुना तटपर ही मिले और वरे! चतुर्थ पटराणी की उसकी नोंध इतिहासने ली है। इतना रहस्यमय चरित्र होनेसे तो गंगाजी नहीं कह रहें कि अतिअद्भुत! ऐसा तो कहीं कभी नहीं देखा! राधा बनकर कान्हाके प्रत्येक वचन सुनें व प्रभुकार्य किया! तत्पश्चात् विरह भी सहन किया और तब जाके पटराणी हुए! नमन हो। गंगाजी आगे कहती है.. ..

७ ममास्तु तव सन्निधौ तनुनवत्वमेतावता
न दुर्लभतमा रतिर् मुररिपौ मुकुन्दप्रिये।
अतोऽस्तु तव लालना सुरधुनीपरंसंगमात्
तवैव भुवि कीर्तिता न तु कदापि पुष्टिस्थितैः॥

मम	अस्तु	तव	सन्निधौ	तनु	नवत्वम्	एतावता
मेरा	हो	आपके	सांनिध्यमें	देह	नवीनतम	इतना

न	दुर्लभतमा	रतिः	मुररिपौ	मुकुन्दप्रिये!
ना (रहे)	दुर्लभतम	प्रीति	श्रीकृष्णमें	हे यमुनाजी!

अतः	अस्तु	तव	लालना	सुरधुनी	परम्	संगमात्
तभी	हो	आपका	लालन	सुरसागरके	परम	संगमपे

तव	एव	भुवि	कीर्तिता	न	तु	कदापि	पुष्टिस्थितैः
आपकी	ही	जगमें	कीर्तिगाथा	नहीं	परंतु	कभी भी	वृद्धिस्थितिमें

(हे यमुने!) तव सन्निधौ मम तनु नवत्वम् एतावता अस्तु, (तत्पश्चात्) हे मुकुन्दप्रिये! मुररिपौ रतिः न दुर्लभतमा (भवेत्)। तव एव भुवि कीर्तिता, तु कदापि पुष्टिस्थितिः न। अतः सुरधुनी परम् संगमात् तव लालना अस्तु॥

(हे यमुनाजी!) आपके सान्निध्यमें मेरे देहका इतना (आवश्यक) नवीनीकरण हो (कि पश्चात्) हे मुकुंदप्रिये! श्रीकृष्णमें रति.. प्रीति दुर्लभतम न रहें। (श्रीकृष्ण अनुरक्ति सुलभ हो जाय।) भुवनमें आप ही कीर्तित है.. आपकी ही प्रशंसा है, परंतु क्वचित ऐसा नहीं है कि (किसीसे या मुझसे) पुष्टि.. वृद्धि होनेसे यह स्थिति है, (आपकी स्वयं ही ख्याति है।) इसलिये सुरधुनी.. (हमारे) गंगा-यमुनाके परम संगम पर, आपकी ही लालना.. प्रीति.. यशोगान हो।

७. मेरा हो तव सन्निधे देह नवीनतम इतना
न रहे दुर्लभतम रति हरिमें मुकुंदप्रिये!
तभी हो तुझ लालना सुरधुनी परं संगमे
आपकी जगे कीर्ति है नहीं कि कोई पुष्टिसे

तात्पर्य ः कहती है, एतावता नवत्वम्.. मेरे देहका इतना नविनीकरण.. सदंतर बदलाव करो, जिससे कृष्णकी प्रीति सबसे दुर्लभ न रहे, सुलभ हो जाय। अत्रे शुद्धिकरण या पवित्रकरणकी वात नहीं है, वो तो है ही! कुछ नया करो! जिससे कृष्णकी दुर्लभतम प्रीति मिले। सचमें, सबसे अलभ्य.. सबसे दुष्कर.. अशक्यमें अशक्य वात हो तो वो है, कृष्ण! कृष्णभक्ति! और कृष्णकृपा!

ज्ञानी कहे अहं ब्रह्मास्मि। मैं पूर्ण हो गया! ब्रह्ममें एकाकार हो गया। अब बाकी क्या है! आचार्यगण वहाँ कहते है कि अभी द्वैतभाव है, भगवद्रूप नहीं हुआ। वहाँ भगवानकी कृपा चाहिये तभी अद्वैतभाव मिले! और द्वैतभावमें भी, जिसके लिये देवताएँ, ऋषिगण या तपस्वी तरसतें है, सर्वस्व छोडनेको तैयार है, फिर भी न मिले वो राधाभाव.. गोपीभाव, जो आत्यंतिक दुर्लभ है! गंगाजी कहती है, कुछ भी करो, मुझे यह भाव दो! कदाचित् वो आप जैसी भक्तिसे ही शक्य है।

नरसिंह इतना ही कहे, ब्रह्मादिक जेनो पार न पामे, आहीरने दर्शन दीधुं रे! यह है भक्तिका चमत्कार! अपना क्या हुआ है पता है? भगवानको मानते है, भगवानका मानते है? ना। लोग पूछतें है, इससे मिलेगा क्या? उत्तर है, सबकुछ। जो चाहो वो मिले। गीतामें भगवानने जो कहा है उसे मानकर तो देखो!

अंतमें, स्तुति करते गंगाजी कहती है, इस जगमें आपकी ही.. भक्तिकी ही कीर्ति है। भक्तिको अन्य किसीकी पुष्टिकी.. अनुमोदनकी आवश्यक्ता नहीं है, हो नहीं सकती। दूसरें तत्त्वोंको भक्तिका साथ चाहिये, भक्तिको किसीका नहीं। इसलिये इस सुरसागर.. तीर्थराज प्रयाग पर, आपका ही लालन-पालन हो। आपका ही यशोगान हो, सभी आपका ही माने, आपमें ही प्रीति रखें, जय हो!

गंगाजी पृथ्वीतट पर लोगोंकी मुक्ति हेतु ही पधारें है, फिर भी कहती है कि सभी आपके द्वारा ही मुक्त हो। ज्ञानका आनंद तो मिलेगा ही, भक्तिका भी मिले!

अब आचार्य श्रीवल्लभ यमुनाजीको कहते है.. ..

८ स्तुतिं तव करोति कः कमलजा सपत्निप्रिये
हरेर्यदनुसेवया भवति सौख्यमामोक्षतः।
इयं तव कथाधिका सकलगोपिकासंगम
स्मरश्रमजलाणुभिः सकलगात्रजैः संगमः॥

स्तुतिम्	तव	करोति	कः	कमलजा	सपत्निप्रिये!
स्तुति	आपकी	करती है	कौन	गंगाजी	हे स्पर्धकप्रिया!
हरेः	यत् अनुसेवया		भवति	सौख्यम्	आमोक्षतः
कृष्णकी	जो सहसेवासे		होता है	आनंद	मोक्षपर्यंत
इयम्	तव	कथा-अधिका	सकल	गोपिका	संगम
यह	आपकी	विशेष कथा	सकल	गोपीयोंका	मिलन
स्मर-श्रम	जलाणुभिः	सकलगात्रजैः			संगमः
स्मरण-कष्टके	अश्रुजलसे	सभी गात्रोमें उत्पन्न रोमांचका			मिलाप

हे सपत्निप्रिये.. यमुने! तव स्तुति कः करोति? (सपत्नि चरणपद्मजा..) कमलजा.. गंगा। यत् हरेः अनुसेवया आमोक्षतः सौख्यम् भवति। सकल गोपिका संगम, इयम् तव अधिका कथा। (यत्) स्मरश्रम जल-अणुभिः सकलगात्रजैः (रोमहर्षणैः) संगमः॥

हे स्पर्धकप्रिया यमुनाजी! आपकी स्तुति करती है कौन? (प्रतिस्पर्धी होकर) कमलजा.. गंगाजी स्वयं! जो श्रीकृष्णकी सेवासे.. भक्तिसे, मोक्षपर्यंत.. मुक्ति तकका (जो अवर्णनीय अत्यंत) आनंद.. सुख होता है, (तव तीरे वह अकल्पनीय प्रमोद पानेवाले) सकल गोपीजनोंका संगम.. मिलन, यह आपकी अधिकथा.. विशेष फलश्रुति है। (भक्तिकी चरमसीमामें) जो स्मरणकी पीडासे.. विरहके दुःखसे नितांत बहते अश्रुजलसे, सभी गात्रोंमें.. अंगोमें होता रोमांच, शरीरी रोमहर्षका मिलाप कराता है। (जो भावसमाधिमें लीन कर देता है।)

८. स्तुति तव करे है कौन! गंगाजी स्पर्धीप्रिया!
कृष्णकी अनुसेवासे सुख मिले आमोक्षतः
ये आपकी अधिकथा सकल गोपोंका मिलन
स्मरणश्रमके अश्रुसे रोमांचका भी संगम

तात्पर्य : सपत्न अर्थात् प्रतिद्वन्द्वी.. स्पर्धक, वेरी, विरोधी या शत्रु। उसका नारीवाची शब्द है, सपत्नि। कहते है, हे स्पर्धकको प्रिय! आपकी प्रशंसा करती है कौन? कमलजा.. चरणपद्मजा.. साक्षात् गंगाजी! स्तुति कैसी.. कौनसे शब्दोमें होती है उसका महत्त्व नहीं होता, कौन करता है उसका होता है। शत्रु या स्पर्धक उनके प्रतिपक्षीकी स्तुति करेगा? क्वचित् ही! मुक्ति देनेकी स्पर्धामें आयी गंगाजी यदी हृदय खोलकर आपकी स्तुति करती हो, वहाँ हम जैसोंकी क्या विसात?

अब अंतिम पदोमें विलक्षण वात कहतें है, आचार्यश्री यमुनाजीकी.. भक्तिकी परमोच्च अवस्थाके दर्शन करातें है। कहते है, आपकी.. भक्तिके सेवनसे मुक्ति तो मिलते मिलेगी, पर श्रीकृष्णकी सेवाका आमोक्षतः.. मुक्तिपर्यंत जो आनंद मिलता है, वो अवर्णनीय है! वो ही परमसुख है क्योंकि अलौकिक है। उसके प्रथम अधिकारी गोप-गोपी हुए। हे यमुनाजी! आपके संगसे उन्होंने पूर्ण भावसे श्रीकृष्णकी सेवा की! अतः रासलीलाका आनंद भी पाया! ऐसेमें ही प्रभु अंतर्धान हुए और बादमें आपके साथ ही, हरिके विरहका अव्यक्त आनंद पाया, जो शब्दातीत है! आचार्यश्री कहतें है, जीवनभर ऐसे विरहको ही तरसना चाहिये!

यही आपकी अधिकथा है! विशेष.. अलौकिक भक्तिका प्रताप है, जो कहीं ओर नहीं। कान्हाके मथुरागमन पश्चात् साथ रहा मात्र यमुनाजीका.. भक्तिका! स्मर-श्रम.. स्मरणकी वेदना! घायलकी गत घायल जानें! स्मृतियाँ कभी कभी असह्य हो जाती है, जलाणुभिः.. अश्रुधाराएँ बहती है, साथमें ही संगम होता है सकलगात्रजैः.. सकल गात्रोंमें.. पूर्ण शरीरमें उत्पन्न होते रोमांचका! वो उद्दपित रोमहर्ष ही गोप-गोपियोंको भावसमाधि प्राप्त कराता है। ये आपकी संगतिका फल है, जो भावसमाधिमें लीन.. एकाकार करती है, अंतर्यामीसे मिलन कराती है!

जो कभी विभक्त हुए ही नहीं, उसे विरह वेदना कैसे होगी?
सचमें, स्मरणकी अश्रुधारासे ही मिलन हर्षा अपार होगी!

९ तवाष्टकमिदं मुदा पठति सुरसुते सदा
समस्तदुरितक्षयो भवति वै मुकुन्दे रतिः।
तया सकलसिद्धयो मुररिपुश्च सन्तुष्यति
स्वभावविजयो भवेद् वदति वल्लभः श्रीहरेः॥

तव	अष्टकम्	इदम्	मुदा	पठति	सुरसुते!	सदा
आपका	अष्टक	यह	आनंद	पढता है	हे यमुने!	नित्य
समस्त	दुरित	क्षयः	भवति	वै	मुकुन्दे	रतिः
सर्व	पापोंका	क्षय	होता है	और	श्रीकृष्णमें	प्रीति
तया	सकलसिद्धयः		मुररिपुः	च	सन्तुष्यति	
उससे	यमुनाजी		श्रीकृष्ण	और	संतुष्ट होतें है	
स्वभाव	विजयः	भवेद्	वदति	वल्लभः	श्रीहरेः	
स्वभाव पर	विजय	होता है	कहते है	वल्लभ	श्रीहरि!	

हे सुरसुते.. यमुने! इदम् तव अष्टकम् पठति, (सः) सदा मुदा (प्राप्स्यति), समस्त दुरित क्षयः वै मुकुन्दरति भवति। तया सकलसिद्धयः च मुररिपुः संतुष्यति (च) स्वभावे विजयः भवेत् (इति) वल्लभः वदति श्रीहरेः॥

हे सूर्यपुत्री यमुनाजी! आपका यह अष्टक जो पढेगा (वो) सदा मुदा.. आनंद (प्राप्त करेगा, उसके) समस्त दुरित.. पाप नष्ट होंगें और श्रीकृष्णकी प्रीति.. अनुरक्ति पायेगा। उससे.. पाठसे सकलसिद्धिरूप यमुनाजी और मुरारि.. श्रीकृष्ण संतुष्ट होंगें, (अतिरिक्त) स्वभाव पर विजय प्राप्त होगा, ऐसा आचार्य वल्लभ कहतें है, श्रीहरि.. श्रीकृष्ण शरण।

९. तव अष्टक आनंदे जो पढ लेता हे सुरसुते!
समस्त दुरितका क्षय होगी मुकुंदमें रति
उससे यमुनाजी और श्रीकृष्ण भी रहें प्रसन्न
स्वभावे होगा विजय कहे वल्लभ श्रीहरि!

तात्पर्यः अष्टक तो पूर्ण हुआ, अब क्या कहेना? समझनेवाले समझ गये! फिर भी हम जैसोंके लिये, एक खिडकी खुल्ली रख्खी है। आश्वासन देते है इस अष्टकको जो ध्यानसे पढेगा, उसके सर्व पाप नष्ट होंगे उपरांत, श्रीकृष्णमें प्रीति होगी। ओर कुछ चाहिये भी क्या! और उससे सकलसिद्धिरूप, सर्वोत्तम युगल.. भक्ति और भगवान दोनों प्रसन्न.. संतुष्ट होंगे। अंतमें सबसे बडी वात....

स्वभाव पर विजय प्राप्त होगा। सचमें स्वभाव ही सबसे बडा शत्रु है, जो विरहभाव पानेमें बाधारूप है! उस स्वभाव पर विजय पानेमें भक्तिदेवी सहाय करेगी! ऐसा आचार्य श्रीवल्लभ कहतें है, श्रीहरि!

वास्तविक, जीवनमें सौ प्रथम और सबसे अधिक कनडगत.. बाधक.. विध्नरूप होगा तो वह स्वभाव है! उपरसे मुश्केली ये है, सबको ये लगता है, 'मेरा स्वभाव अच्छा ही है, सुधारणाकी कोई आवश्यक्ता नहीं, आप अपना देखें!' ऐसी परिस्थितिमें स्वभावकी त्रूटीयाँ दिखायें वो गुरु! वो ही आध्यात्मिक दर्पण!

स्वभाव पर विजय अर्थात् दूसरे सभी भाव परे हो जाय और एक 'भक्तिभाव' स्वभाव बन जाय! ऐसा होगा क्या? भक्ति विना बहोतसे जन्म लग जायेंगे, पर भक्तिसे यदि अंतःकरण जागृत हो जाय तो! इसी जन्ममें ही!!

वदति वल्लभ श्रीहरि! आचार्यश्री कहते है, हरिके.. श्रीकृष्णके पूर्णशरणसे वो शक्य होता है, पर अपने जीवनकी घटमाला अलग है! ऐसा कुछ शांतिसे पढना, समझना या चिंतन करना शक्य नहीं है। समय नहीं और समझ भी नहीं, इसलिये कोई कहे ऐसा करतें है! माला कहे तो माला, पाठ कहे तो पाठ, सेवा कहे तो सेवा.. ऐसा सबकुछ करतें है, ठाकोरजी देख लेंगे!

होगा, व्यर्थ कुछ नहीं जाता, पर कईं जन्म लगेंगे। नाम-जप या पाठ-पूजा समझकर करेंगे तो भक्तिभाव बढेगा, स्वभाव प्रभुप्रिय होगा! अवधी कम होगी!

.. .. यह प्रभु-प्रसादी ले ली तो ठीक है, अन्यथा हरि हरि! हरे कृष्ण.. ..

• श्रीयमुना आरति •

महराणी यमुना माँ कृपाली घनश्यामा
योग पुष्ट करतें है योग सिद्ध करतें है
यमन करो मैया जय हो जय श्रीयमुना ! १

भास्करतनया भारतरमणा प्रभावी तव प्रभुता
भावभक्ति भरतें है भावभुक्ति भरतें है
प्रभामति दो माँ जय हो जय श्रीयमुना ! २

शनिश्चर यमराज भगिनी मिटायें भय भ्रमणा
अचल अभयपद देतें अचल अमरपद देतें
सफल करें भव ये जय हो जय श्रीयमुना ! ३

श्रुति स्मृतिने सराही तुज हृदय करुणा
तव शक्ति कल्याणी तव दृष्टि कल्याणी
कृपा रहो सर्वदा जय हो जय श्रीयमुना ! ४

ऋषिराह तू मुनिमार्ग तू परम प्रेमपंथा
घट घटमें तू विराजे घाट घाट तू राजे
विचरे आनंदा जय हो जय श्रीयमुना ! ५

वल्लभगाने पुष्टिप्रभावे भक्ति बहाति माँ
सरस्वति सोहे है गंगाजी शोभे है
सान्निध्ये तेरे जय हो जय श्रीयमुना ! ६

रासानुरागी व्रजविहारिणी तू व्रजेशवल्लभा
भक्ति अविचल स्थापो भक्ति अविरत दे दो
श्रीकृष्ण शरण दो माँ जय हो जय श्रीयमुना ! ७

यमुनाजीकी आरती लायें प्रशांति जीवनमें
अम सुखका तव चरणे अम दुःखका तव स्मरणे
शमन करो ओ माँ जय हो जय श्रीयमुना ! ८

हरे कृष्ण • प्रशांत देसाई